अक्कल बड़ी या भैंस

— अण्णाभाऊ साठे

(यह नाटक महाराष्ट्र की लोकबोली में लिखा गया है अतः जिस क्षेत्र का नाट्य दल इसका मंचन करना चाहे, वह अपने–अपने क्षेत्र की बोलियों का प्रयोग कर सकता है। — अनुवादक)

दृश्य एक

(लावणी/कोई भी लोकधुन)

खानदेश में गाँव एक है, राजुरी जिसका नाम।
उसी गाँव की कथा है दोस्तों, आएगी कभी काम।।

वहाँ एक था दूधवाला और दूसरा था साहूकार।
खुशी–खुशी रहते थे दोनों, नहीं था कोई दुराव।।

दोनों का धंधा एक था, कालाबाजारी करते थे।
अपना फायदा देखते थे, किसानों को लूटते थे।।

(राजुरी गाँव में जानबा किसान का घर)

जानबा: सुनती है, भिव्या गलत नहीं कह रहा था। मैंने समूचा गाँव छान मारा मगर कपड़े नहीं मिले!

पुतली : पूरे गाँव में कपड़ा ही नहीं है?

जानबा: वो बात नहीं है, कपड़ा तो ढेर सारा है, मगर उनकी किमतें आसमान छू रही हैं!

पुतली : मतलब? मैं समझी नहीं।

जानबा: अरे, छे आने के गमछे को बारह रूपये का बतला रहा है दुकानदार! और ऊपर से कहता है कि नहीं खरीद सकते तो बिना डढ़ैल तेल के गाड़ी हाँको। ऐसे में गरीब आदमी क्या करेगा?

पुतली : ये सब सरकार का किया–धरा है!

जानबा: अरे ये सरकार तो कहती है कि पंद्रह आने सेर ज्वार बेचो, मगर ये व्यापारी तीन रूपये सेर से नीचे नहीं बेच रहे! यही बात कपड़े की है।

पुतली : तो फिर सरकार कर क्या रही है?

जानबा: सरकार मक्खी मार रही है! इस देश में तो अंधा पीसे और कुत्ता खाए, यही चल रहा है। चारों ओर कामचोरों और घूसखोरों का बोलबाला है!

पुतली : गुंडाचाचा क्या बोला?

जानबा: कहाँ का गुंडाचाचा और बंडाचाचा! सब एक ही थैली के चट्टबट्टे हैं — लालची कहीं के! वो तुम्हारा चाचा एक पैसा कम करने के लिए तैयार नहीं है। कीचड़ में धँसे भैंसे की तरह अड़ा रहा!

पुतली : मगर क्या कह रहा है वो?

जानबा: उसने कहा, 'पोसाता है तो ले, वर्ना जा मलकापुर के बाजार में'!

पुतली : हाय राम! तुम्हारा दोस्त कहलाता है और ऐसा बोलता है?

जानबा: अरे काहे का दोस्त और काहे का सखा! पूँछ कट जाए तो क्या साँप काटना छोड़ देगा? मैं किसान सभा का काम करता हूँ और वह किसान सभा को गाली देता है — हमारे बीच कैसे दोस्ती हो सकती है!

पुतली : तो अब क्या करोगे? तुम्हारी धोती फट गई है और मुझे भी एक साड़ी की ज़रूरत है।
जानबा : अब मलकापुर के बाजार ही जाकर देखता हूँ। थोड़ी रोटी और प्याज बांध दे।

दृश्य दो

(कपड़ा व्यापारी गुंडूचाचा और बंडू दूधवाला मलकापुर के बाजार से लौट रहे हैं)

गुंडू : बंडू, अरे यह जानबा आजकल बहुत उछल रहा है! सुबह धोती खरीदने दुकान आया था। मैंने कीमत बताई तो मेरे मुँह पर धोती दे मारी और ठसके से निकल गया। इन दिनों उसको बड़ी गर्मी चढ़ गई है।
बंडू : हाँ सेठजी, आजकल वो बड़ा तीसमारखाँ बना घूम रहा है। राजा इंद्र की कहानियाँ सुना रहा है!
गुंडू : वो किसके इशारे पर नाच रहा है, जानते हो? उस किसान सभा के। उन लोगों ने उसका दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ा दिया है।
बंडू : सही बात है। वे लोग कहीं भी सभा करते हैं, उसमें काला बाजार, सफेद बाजार, किसान राज, मजदूर राज जैसी पता नहीं, क्या–क्या बातें करते हैं!
गुंडू : और वही बातें सुन–सुनकर जानबा जैसे लोगों का दिमाग फिर जाता है और वे हमें अकल सिखाने लगते हैं! अब हमें इस जानबा को सबक सिखाना ही होगा। ठीक कह रहा हूँ न मैं?
बंडू : हाँ हाँ, उसे सबक सिखाना ही होगा।
गुंडू : तो बोल, क्या उपाय किया जाए?
बंडू : देखो चाचा, उपाय मत करो, सीधे डंडे लगाओ। हो तैयार?
गुंडू : अरे नहीं नहीं, डंडा लगाने से मामला नहीं सुलझेगा! (सोचते हुए) ऐसा करें तो...! जानबा थोड़ी देर में बाजार से लौट ही रहा होगा। उसे रोकते हैं। उसके बाद मैं जो–जो कहूँगा, उसमें तू हाँ में हाँ मिलाना, मैं जो बोलूँ, तू उसे दोहराना! देख लेना, मैं उसे कैसे सबक सिखाता हूँ!

(जानबा आता है)
कैसे जानबा, बाजार हो आए?
जानबा : हाँ, आप लोग भी बाजार ही गए थे न?
गुंडू : हाँ। मगर क्यों रे जानिया, कितना सस्ता था बाजार?
जानबा : देखिये सेठजी, आपकी गँवई कीमत और सरकार के कंट्रोल की कीमत में ज़मीन–आसमान का फर्क है।
गुंडू : ज़मीन–आसमान का फर्क? अच्छा! कितना फरक है रे, बताना तो ज़रा?
जानबा : बहुत जादा, घोडे और गधे जितना फर्क है! आपकी कीमत तो गरीब की जान ही ले लेती है।
बंडू : लो इसकी बात सुनो, कैसे होशियारी बघार रहा है!
गुंडू : बात ये है न बंडू, इसके दिमाग में किसान सभा वालों ने गोबर भर दिया है।
बंडू : क्यों रे जानिया, उठते–बैठते किसान सभा–किसान सभा घोखता रहता है! अगर किसान राजा हो जाएगा, तो नांगर कौन चलाएगा? आँय, तेरा बाप या किसान सभा का दादा?
जानबा : बंडू, ज़बान सम्हाल के बात कर, नहीं तो मुक्का मार कर दाँत तोड़ दूँगा। तू क्या समझता है रे चमचे?
गुंडू : बंडा, अरे झगड़ा मत कर! सच ही कहा गया है, किसानों को अकल नहीं होती! गधा कहीं का!
जानबा : किसान को अकल नहीं होती, कहना क्या चाहते हो चाचा?
गुंडू : इसमें कहना ही क्या है? तू ही देख ले। घर का पैसा बाहर बाँट आया! पढ़–लिखकर फायदा ही क्या हुआ?

जानबा : चाचा! इधर–उधर की हाँकने की बजाय सीधे समझाओ कि किसान को अकल नहीं होती, कैसे कह रहे हो? किसान अब जाग गया है, अपना बुरा–भला समझने लगा है।

गुंडू : अच्छा! तो किसान को अकल आ गई है, वह जाग गया है! और तू जागा हुआ किसान है!

जानबा : हाँ, बिल्कुल हूँ।

गुंडू : चल, हाथ–कंगन को आरसी क्या! सब लोग एक–एक अकल की कहानी सुनाते हैं। किसी की कहानी झूठी निकली तो उसे दंड भरना पड़ेगा।

बंडू : कैसी कहानी सुनानी है?

गुंडू : कैसी भी...। मगर उसमें अकल की बात ज़रूर हो।

जानबा : आप लोग सच्ची–झूठी कुछ भी कहानी सुना देंगे तो?

गुंडू : उससे कोई फर्क नहीं पड़ता! कहानी में अकल की बात होनी चाहिए! और कहानी ऐसे सुनानी है कि सामने वाले को सच लगे। अगर सामने वाले को झूठ लगी तो सामने वाले को जुर्माना भरना पड़ेगा।

बंडू : मगर जुर्माना क्या होगा, यह पहले ही तय कर लीजिए।

गुंडू : जो हारेगा, वह अपनी सारी जमीन–जायदाद, चल–अचल संपत्ति बेचकर, उससे प्राप्त होने वाली रकम जीतने वाले को देगा।

बंडू : (गुंडू को अलग ले जाते हुए) मैं क्या कहानी सुनाऊँ चाचा? हमारी सात पीढ़ियों ने कभी अकल की बात नहीं की है।

गुंडू : अरे, कुछ भी सुना देना। बस, ऐसी कहानी सुनाना, जिसे जानिया कह दे कि यह तो झूठी है!

जानबा : मगर जुर्माना वसूल कैसे किया जाएगा? अगर कोई मुकर जाए तो क्या होगा?

गुंडू : ऐसा करते हैं, पंचों को बुला लेते हैं, उनके सामने करार कर लेते हैं। मंजूर?

जानबा : मंजूर है। बुलाइये पंचों को।

(पंच आते हैं। पंचों के सामने करार होता है। पंच कहानी सुनने बैठ जाते हैं)

पाँच पंचों की गवाही पर। हुआ समझौता तीनों का।।
सुनाएंगे तीनों कहानी। ध्यान रहेगा पंचों का।।1।।

गर कहे कोई कहानी को झूठा। दंड उसे भरना होगा।।
समझकर अपने को दोषी। चाहे जमीन बेचना होगा।।2।।

पंच : हाँ बताइये, कौन सुनाएगा पहले?

बंडू : जानिया, चल बघार अपनी किसान सभा का ज्ञान!

जानबा : पहले आप!

गुंडू : अच्छा बंडवा, तू शुरु कर पहले।

बंडू : ठीक है, कोई बात नहीं, मैं ही शुरु करता हूँ। हमारे खानदान की ही कहानी सुनाता हूँ। सुनिये। हमारा खानदान शुरु से ही काफी ऊँचा रहा है। धंधा दूध का था। आसपास के बहत्तर गाँवों में हमारा ही दूध पहुँचता था। घर में अनगिनत गायें–भैंसें थीं। दूर–दूर तक गायें ही गायें और भैंसे ही भैंसे दिखाई देती थीं।

जानबा : अच्छा! मगर कुछ तो हिसाब होगा!

बंडू : ठीक है, बताता हूँ... सुनो,

(लावणी / अन्य लोकधुन)

मेरे घर में अनगिनत गाय–भैंस के झुंड थे।

चरते रहते चारों ओर, कई हजार, बछरू थे।। 1।।

पाँच हजार का दाना–पैरा, रोज खर्च होता था।
तीन हजार किसान–मजदूर, घर में रोज खटता था।। 2।।

जानबा: अरे बापरे! इतने जानवरों का दूध कौन दुहता था और कहाँ इकट्ठा किया जाता था?
बंडू : वह भी बताता हूँ,

(लावणी/अन्य लोकधुन)

दूध रखने की खातिर मेरे बाप ने बनवाया था
सुंदर तालाब, पाँच मील वर्गाकार का खुदवाया था।। 3 ।।

गुंडू : अरे बंडू, मगर तू ने यह तो बताया ही नहीं कि दूध कैसे दुहा जाता था और गर्म कैसे किया जाता था?
बंडू : बताता हूँ, बताता हूँ,

दूध निकलता अपने–आप, बहता जाता आप ही आप।
तालाब में जमा होता था, सूरज की गरमी से पक जाता था।। 4 ।।

जानबा: और दही कहाँ जमाया जाता था?
बंडू : तालाब में ही!
जानबा: और छाछ?
बंडू : वह भी तालाब में ही! दिन में दूध गर्म होता था, रात में दही जम जाता था। सुबह ही सुबह सारे गाय–भैंस–साँड और बैलों को तालाब में छोड़ देते थे। समूचे तालाब को खुरों से रौंदते ही छाछ तैयार हो जाता था! (जानबा की हँसी छूट जाती है) क्यों? तुम्हें झूठ लग रहा है?
जानबा: नहीं नहीं, एकदम सच है सब! तुम आगे बढ़ो!
बंडू : आसपास के सभी गाँवों में दूध, दही, घी और मक्खन हम ही बेचते थे। मगर लोग ज़रा ज़्यादा ही सयाने होने लग गए। हम थोड़ा भी महंगा बेचते या पानी मिलाते, लोग हल्ला मचाने लगते थे इसलिए हमारा धंधा डूब गया! हमने भी सोचा कि चलो ठीक है, हमारे भी दिन बहुरेंगे। तो जैसे सब गाँववालों के दिन बहुरे, वइसे हमारे दिन भी बहुरें। बोलो सियावर रामचंद्र की जय! कैसी है चाचा?
गुंडू : एकदम सोलह आना!
जानबा: सोलह आने नहीं सत्रह आने!
बंडू : (गुंडू से) अरे सेठजी, यह तो झूठ मानने को तैयार ही नहीं है! कह रहा है कि सत्रह आने सच है।
गुंडू : धीरज रख बंडा! (सबको संबोधित करते हुए) चलिये, तो अब मैं सुनाता हूँ कहानी! हम लोग भी खानदानी व्यापारी रहे हैं। हमें तो ईश्वर ने ही यह जन्मसिद्ध अधिकार दिया है कि हम व्यापार करके मुनाफा कमाएँ! हमारा व्यापार–धंधा समूची दुनिया में फैला हुआ था। विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ लोगों को उपलब्ध कराना हमारा कर्तव्य था! हमारे पास अकूत सम्पत्ति थी, जिसके कारण हम दुनिया के पालक भी थे। समझ गए न?
बंडू : सही बात! मालिक ही तो पालक होता है!
जानबा: तुम सुनो चापलूस! तुम्हारी समझ उतनी ही है!
बंडू : तो, मतलब... मतलब तुम्हें यह बात झूठ लग रही है?
जानबा: बिल्कुल नहीं, आगे सुनते हैं!

गुंडू : तो सुनो,

(लावणी / अन्य लोकधुन)

अमीर हमारा खानदान, पैसा था बहुत ज़्यादा।
दुनिया में बजता था डंका, कुबेर से भी ज़्यादा।। 1 ।।

सात समुंदर पार, हमारा चलता था ब्यौपार।
हमेशा ही होता था मुनाफा, भरे रहते थे घड़े चार।। 2 ।।

जानबा: रशिया में भी चलता था क्या आपका व्यापार?
गुंडू : अरे सभी देशों में, रशिया सहित!
जानबा: कहते हैं, वहाँ तो किसान–राज है, फिर?
गुंडू : तो तुम्हें झूठ लग रहा है?
जानबा: नहीं नहीं! अच्छा, तो व्यापार किस तरह चलता था?
गुंडू : इस तरह,

दरवाज़े पर था पेड़ बरगद का। शाखाएँ थीं उसकी पाँच।
दूर तक फैली हुई थीं। पाँचों महाद्वीपों के बीच।। 3 ।।
उन शाखाओं पर से समूचा माल। होता था पार्सल।
हम भेजते थे। और होते थे मालामाल।। 4 ।।

बंडू : वाह वाह सेठजी! क्या दिमाग पाया है! वाकई अकल के बिना कुछ नहीं हो सकता। इसी को कहते हैं दिमाग!
गुंडू : मगर अब लोग पथ–भ्रष्ट हो गए हैं। हम पालक होने के बावजूद हमें कोई पूछता नहीं है। लोग समझ ही नहीं रहे हैं कि अगर हम नहीं रहे तो वे जियेंगे कैसे? और अब तो बड़े–बड़े देशद्रोही नेता भी शोर मचा रहे हैं कि हमें फाँसी पर चढ़ा देना चाहिए! कहते हैं कि हमने कालाबाज़ारी कर मुनाफा कमाया है! वे यह भूल जाते हैं कि मुनाफा कमाना हमारा धर्म है। हम धर्म के अनुसार ही आचरण कर रहे हैं!! तो यहीं मेरी कहानी होती है खतम! बोलो जानबा, कैसी लगी?
जानबा: बहुत बढ़िया! वाकई अकलवाली है!
बंडू : चल जानबा, अब तू अपनी अकल का दिया जला!
जानबा: आप दोनों ने अपने–अपने खानदान की कहानी सुनाई तो मैं भी अपने ही खानदान की कहानी सुनाता हूँ।
गुंडू : कोई भी सुना, मगर उसमें अक्लमंदी की बात होनी चाहिए।
जानबा: तो पंचगण! ध्यान दीजिएगा। हम तो पहले से ही किसानी करते रहे हैं। सब लोग खेत में मेहनत करके फसल उगाते थे और पकने के बाद अनाज को आपस में समान हिस्सों में बाँट लेते थे। सभी किसान हँसी–खुशी रहते थे। उस समय कोई किसी को ठगता नहीं था। लूटता नहीं था। उस समय साहूकार, मुनाफाखोर व्यापारी कोई नहीं था। सब मिलकर मेहनत करते और सुख से रहते थे।
गुंडू : अरे, झूठ क्यों बोल रहा है?
पंच : तो आप इस कहानी को झूठी कह रहे हैं?
गुंडू : नहीं नहीं...
पंच : तो फिर? जानबा आगे सुनाइये।
जानबा: सुनाता हूँ,

(आल्हा / कोई लोकधुन)

दूर–दूर तक फैले थे खेत। किसान सभी खुश थे अत्यंत।
आलस का नहीं था अता–पता। पसीना बहाते सभी सदा।
बारिश की चिंता नहीं थी हमें। गर वह धोखा देती हमें।
वरूण को चुनौती देते थे हम। ताल ठोंकते खेतों में हम।
सभी मिलकर एकजुट होते। एक ही दिन में कुआँ खोदते।
सभी खेतों में पानी फिराते। हरे–भरे पौधों की चादर ओढ़ाते।
अनाज की फसलें ही फसलें। चारों ओर खेत मुस्कुराते।। 1 ।।

अनाज की थीं किस्में कितनी। चने की चादर फैलती थी घनी।
ज्वार, बाजरा और धान था। गेहूँ उसमें शान से खड़ा था।
गन्ना और मक्का, काली उड़द दाल। सफेद अरहर, मोठ–मूँग दाल।
खाकर मज़ा देता फल्लीदाना। सब्जियों की फसल सोलह आना।
समूचे इलाके में अकाल का नाम नहीं। खुशी में झूमता देश, कोई दुख का नामलेवा नहीं।। 2 ।।

तो इसतरह, सभी लोग बहुत सुखी–संतुष्ट थे। मगर जिस तरह अनाज में भी कुछ ऐसे बीज उपजते हैं, जो न तो उगते हैं और न ही भींगते है। गाँव में ऐसे ही दो मुफ्तखोरों का जन्म हुआ! उन्हें मुफ्त पका–पकाया खाने की आदत लग गई। सच को झूठ करना, ईश्वर के नाम पर किसानों को फँसाना, सूद पर पैसा चलाना और झूठे–सच्चे दस्तावेज़ बनाकर किसान को लूटना।

गुंडू : कौन थे वे दोनों?

जानबा : एक थे आपके पिताजी ओर दूसरे थे बंडू के पिताजी!

गुंडू : अरे, ये तो हमें गाली देने लगा! ये कैसी कहानी है?

पंच : तो क्या यह कहानी झूठी है?

गुंडू : नहीं... मगर...

पंच : तो फिर आगे सुनिये।

जानबा : उन्होंने इसतरह अन्याय कर पैसा जमा किया और लोगों का शोषण शुरु कर दिया। गुंडा के पिता ने व्यापार शुरु किया और बंडा के बाप ने दूध का धंधा शुरु किया। इसके बाद इन मुफ्तखोरों की ही चलने लगी।

गुंडू : अरे कहानी सुना रहा है या किसान सभा में भाषण दे रहा है?

जानबा : कहानी सुना रहा हूँ। एक दिन क्या हुआ कि इधर आपके बरगद के पेड़ की शाखाएँ टूट गईं और समूचा गेहूँ समन्दर की भेंट चढ़ गया। उधर इसके बाप के पैरे के सभी गट्ठरों में अचानक आग लग गई।

मेरे–तुम्हारे बाप के बीच पहचान थी।
अनाज की ज़रूरत तुम्हारे बाप को भी थी।
नौ लाख मन अनाज मांगा उसने।
मेरे बाप से मिन्नतें कर–कर के।
ले गया अनगिनत बोरे गेहूँ के।

गरज पैरे की हुई बाप को इसके।
कमी हो गई थी दाना–पानी की।
उसकी गाय–भैंस भूख से मरती।
सो गाड़ी में ले गया पाँच हजार का चारा।
भूल गया बाद में, किया वारा–न्यारा।

दोनों ने बात की उधारी लौटाने की
मगर वे लोग भूलकर, कर गए चालाकी।

गुंडू : ये कैसी कहानी है?

पंच : झूठी है क्या? आगे सुनिये।

बंडू : अरे चाचा! मेरे पास तो दो ही भैंसें हैं!

जानबा :

अब अपने पूर्वजों की बचाएँ लाज। उधारी हमारी चुकाएँ आज।
शिकायत करूँगा विश्वासघात की। गवाही होगी पाँच पंचों की।
बचा नहीं पाएँगे इज़्ज़त अपनी। जेबें टटोल लो अपनी–अपनी।
बाकी चुकाकर विवाद निपटाओ। पुराने हिसाब से मुक्ति पाओ।।

चलिये, जिस ईश्वर ने आपको मुनाफा कमाने का हक़ दिया है, उसका सुमिरन कर अपनी–अपनी उधारी चुका दीजिए!

गुंडू : अरे जानबा, हमने तो टाइम पास होने के लिए कहानी सुनने–सुनाने की बात की थी, तू इसे सच मान बैठा है!

जानबा : चाचा, अब आप पंचों से बात कीजिए!

बंडू : अरे ये क्या कर दिया चाचा, मेरी तो सिर्फ दो ही भैंसें हैं! जानबा, मैं तुम्हारे पैर पड़ता हूँ। मुझे इस बला से बचाओ।

पंच : तो चाचा और बंडू, कहानी झूठी है क्या?

बंडू : (तुरंत) झूठी है, सोलह आने झूठी है!

पंच : चाचा, आपको क्या कहना है?

गुंडू : कहानी है तो अच्छी...

पंच : ठीक है, तो आप पर नौ लाख मन अनाज बाकी है। और गुंडू, तुमने भी कहानी को पहले सच कहा है इसलिए अब दोनों की अचल सम्पत्ति की नीलामी करनी होगी। उससे जो रकम आएगी, वह जानबा किसान को पटानी होगी।

गुंडू : जानिया, तू हमारे घर–आँगन को बरबाद करने पर तुला है!

जानबा : क्या चाचा, आप ही तो कहते थे कि किसान को अकल नहीं होती!

गुंडू : तेरा ओर तेरी किसान सभा का नाश हो!

जानबा : अरे जा जा, तुम जैसे कुत्ते तो भौंकते ही रहते हैं। जब हिटलर के पाप का घड़ा भरकर फूट गया तो तेरे जैसे मच्छर की क्या मजाल! थोथा चना बाजे घना! कोसते रहो किसान सभा को!

(पंच बंडू की दो भैंसों और गुंडू की सम्पत्ति की नीलामी की घोषणा करते हैं। नीलामी होती है। जानबा विजयी होकर घर लौटता है।)

दृश्य तीन

जानबा : अरे सुनती है, देख तो मैं बाजार से क्या लाया हूँ?

पुतली : हे भगवान! ये कागज क्यों लाये हो?

जानबा : अरे किसान सभा की जीत हुई। मुफ्तखोरों ने किसानों की जो ज़मीनें हथियाई थीं न, उसके कागज वापस मिल गए हैं। बुलाओ गाँव के सभी किसानों को!

(सब किसान इकट्ठा होकर किसान गीत गाते हैं)
(किसान गीत, कवि – द.ना.गव्हाणकर)

हम हैं धरती के लाल। भाग्यशाली।
हम हैं धरती के लाल।।मु.।।

खेतों पर जाएंगे। साथ–साथ गाएंगे।
जंगल में गाते हुए पंछी मस्त हैं हम।।1।।

जमीन है हम सबकी। खून–पसीने से सींचीं।
आज मिला है फल, डोल रही खड़ी फसल।।2।।

ज्वार, बाजरा, मक्का। मोती जैसा चमकता।
मेहनत की रोटी हम खाएंगे साल भर।।3।।

साहूकार, पूँजीपति। जुल्मियों को कुचलेंगे।
आओ मिलकर अन्याय को लगाएँ ठोकर।।4।।

समानता स्थापित करेंगे। एकता मजबूत रखेंगे।
कोई नहीं मालिक और यहाँ मज़दूर ।।5।।

हम हैं धरती के लाल। भाग्यशाली।
हम हैं धरती के लाल।।

....

हिंदी अनुवाद : उषा वैरागकर आठले
(अनुवाद सहयोग – अजय आठले, भरत निषाद)

ऽ () फ्र ्र प ॰ ट द्म ङ्क द्द कृ प्र ह्म ह्व स्त्र ॅ
+ ⊃ ss ङ